

कक्षा - 10

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 9

जो बीत गयी

(हरिवंश राय बच्चन (1907-2003))

भाग – 1

पल्लवी कलिता

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

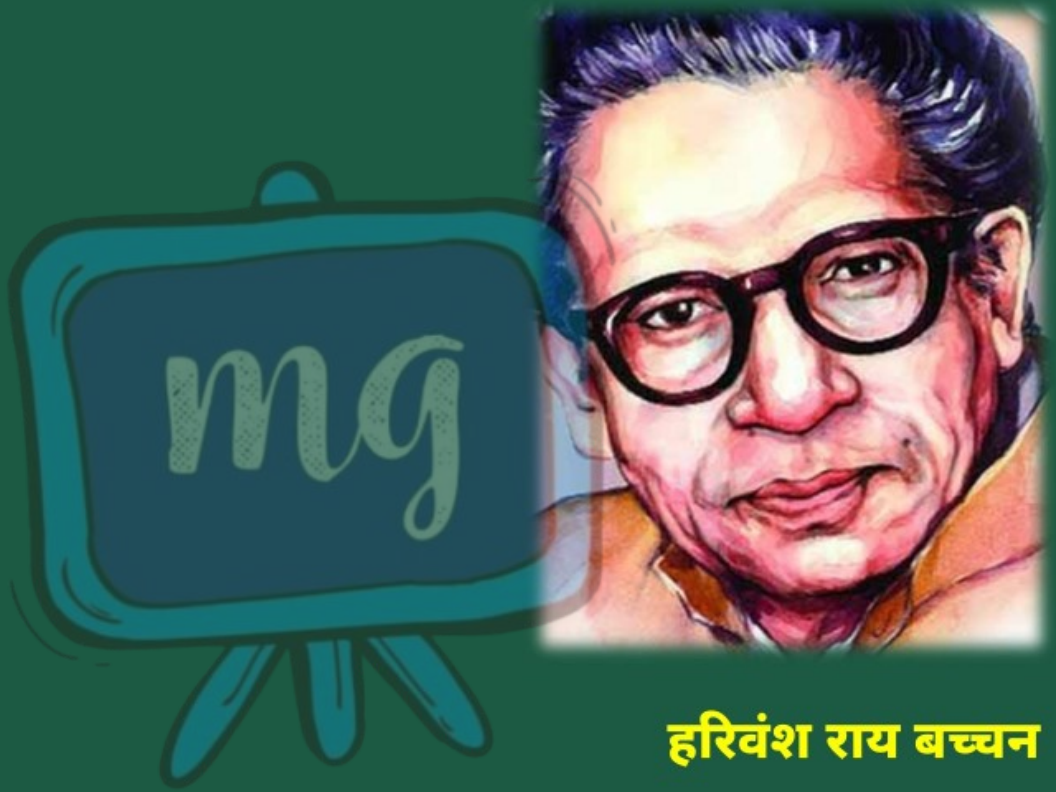

हरिवंश राय बच्चन

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

कवि परिचय

हरिवंश राय बच्चन (1907-2003)



जन्म - कवि हरिवंश राय बच्चन का जन्म 27 नवंबर 1907 को इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) में हुआ था।

शिक्षा - इलाहाबाद के कायस्थ पाठशाला तथा गवर्नमेंट कॉलेज से शिक्षा प्राप्त करने के बाद आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय तथा काशी विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

कर्म जीवन - सन् 1941 से 1952 तक आप इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के व्याख्याता रहे। फिर दो वर्षों तक इंग्लैंड में शोधकार्य संपन्न कर भारत लौटे। आप कुछ समय तक आकाशवाणी इलाहाबाद, विदेश मंत्रालय में हिंदी विशेषज्ञ तथा राज्यसभा के सदस्य भी रहे।

रचनाएँ - बच्चनजी ने अनेक पुस्तकों की रचनाएँ की हैं। उनमें से मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा-निमंत्रण, एकांत संगीत, आकुल अंतर, सतरंगिनी, हलाहल, खादी के फूल, मिलन यामिनी आदि काव्य-ग्रंथ प्रसिद्ध हैं। इसके अतिरिक्त डायरी, आलोचना, निबंध आदि भी आप लिखते थे।

मृत्यु- सन् 2003 में हुआ।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্ৰ শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca | Foundation

जो बीत गयी सो बात गयी !

जीवन में एक सितारा था,
माना, वह बेहद प्यारा था,
वह डूब गया तो डूब गया;
अंबर के आनन को देखो,

सितारा	:	তৰা
बेहद	:	অত্যাধিক
अंबर	:	আকাশ
आनन	:	শিৰ

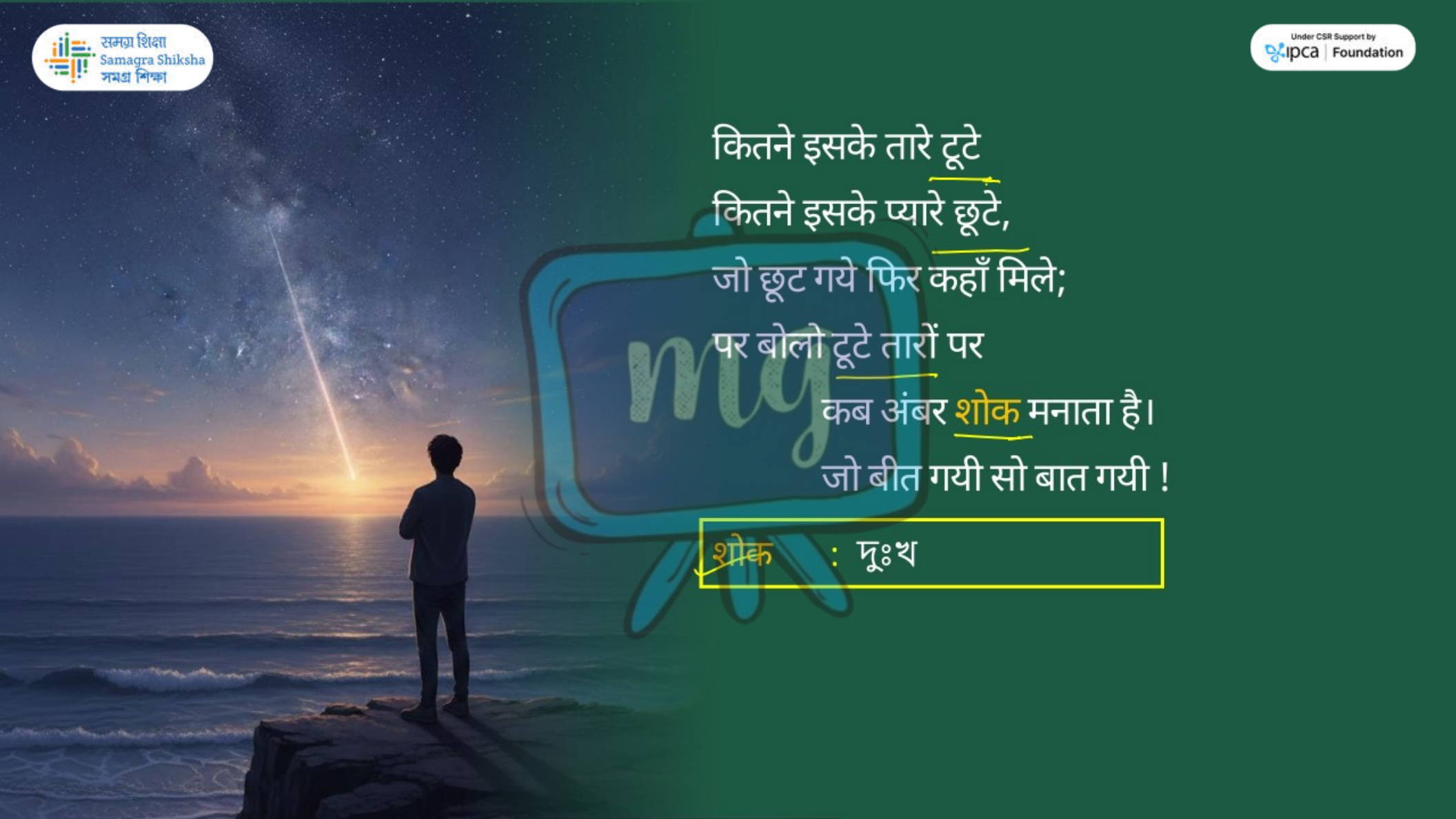

कितने इसके तारे टूटे
कितने इसके प्यारे छूटे,
जो छूट गये फिर कहाँ मिले;
पर बोलो टूटे तारों पर
कब अंबर शोक मनाता है।
जो बीत गयी सो बात गयी !

शोक : दुःख

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

जीवन में वह था एक कुसुम,
थे उस पर नित्य निछावर तुम
वह सूख गया तो सूख गया;
मधुवन की छाती को देखो,

कुसुम : फूल
नित्य : प्रतिदिन
निछावर : समर्पन
मधुवन : वागिचा



सूखीं कितनी इसकी कलियाँ
मुर्झायीं कितनी वल्लरियाँ,
जो मुर्झायीं फिर कहाँ खिलीं;
पर बोलो सूखे फूलों पर
कब मधुवन शोर मचाता है !
जो बीत गयी सो बात गयी !

वल्लरियाँ : लता



जीवन में मधु का प्याला था,
तुमने तन-मन दे डाला था,
वह टूट गया तो टूट गया;
मदिरालय का आँगन देखो,

मधु	:	মদ
मदिरालय	:	মদৰ দোকান

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

कितने प्याले हिल जाते हैं,
गिर मिट्टी में मिल जाते हैं,
जो गिरते हैं कब उठते हैं;
पर बोलो टूटे प्यालों पर।
कब मदिरालय पछताता है !
जो बीत गयी सो बात गयी !

मृदु मिट्टी के हैं बने हुए,
मधुघट फूटा ही कहते हैं,
लघु जीवन लेकर आये हैं,
प्याले टूटा ही करते हैं,
फिर भी मदिरालय के अंदर
मधु के घट हैं, मधुप्याले हैं,

मृदु	: কোমল
मधुघट	: মদেৰে ভৰা কলহ
लघु	: সৰু, তুচ্ছ

जो मादकता के मारे हैं,

वे मधु लूटा ही करते हैं;

वह कच्चा पीनेवाला है

जिसकी ममता घट-प्यालों पर

ममता : दया, प्रेम

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

जो सच्चे मधु से जला हुआ

कब रोता है, चिल्लाता है !

जो बीत गयी सो बात गयी !



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca Foundation

'जो बीत गयी'

कविता हरिवंश राय 'बच्चन' द्वारा रचित बड़ी ही रोचक और शिक्षाप्रद है। जिस प्रकार अपने टूटे हुए तारों पर अंबर शोक नहीं मनाता अथवा अपने प्रिय फूलों के सूखने अथवा मुरझा जाने पर मधुवन कभी शोर नहीं मचाता, उसी प्रकार मनुष्य को अपने बीते हुए दुख को भुलाकर वर्तमान की चिंता करनी चाहिए। अपने दुखों को यादकर शोक मनाने से अच्छा है कि जीवन के बाकी बचे समय को सुखपूर्वक बिताया जाए, जीवन का भरपूर आनंद उठाया जाए।

मूल्यांकन



1 | हरिवंश राय बच्चन ने इंग्लैंड में किस उद्देश्य से दो साल बिताए ?

क काव्य लेखन।

ख शोध कार्य।

ग अध्यापन।

घ राजनीति।

मूल्यांकन



2 "जो छूट गए फिर कहाँ मिले" - यह किसके लिए कहा गया?

क तारे

ख प्याले

ग घाट

घ वृक्ष

मूल्यांकन



3 कविता का प्रमुख आधार किस पर है?

क भूतकाल की घटनाएँ

ख प्राणियों का जन्म

ग जीवन का दर्शन

घ प्रकृति का वर्णन

मूल्यांकन



4 'मृदु मिट्टी के बने हुए' किसके लिए कहा गया?

क मनुष्य

ख तारे

ग प्याले

घ नदी

मूल्यांकन



5 'वल्लरी' का अर्थ क्या है?

क पत्ता

ख पौधा

ग फल

घ लता